

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, लूका-प्रेरितों के कार्य का धर्मशास्त्र सत्र 1, लूका ग्रंथसूची, बाँक का अवलोकन , और लेखकत्व

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 1 है, ल्यूक ग्रंथ सूची, और फिर डेरेल बाँक का अवलोकन और लेखकत्व।

ल्यूक और धर्मशास्त्र पर हमारे पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है। यह ल्यूक के सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक का धर्मशास्त्र होगा, जो कि उनकी दूसरी पुस्तक है।

आइए हम कुछ और करने से पहले प्रार्थना करें। दयालु पिता, आपके पवित्र वचन के लिए धन्यवाद। नए नियम का आधे से ज़्यादा हिस्सा हमें देने के लिए लूका का इस्तेमाल करने के लिए आपका धन्यवाद।

हम प्रार्थना करते हैं कि हमें उनकी सोच और लेखन तथा उनके माध्यम से आपके द्वारा दिए गए संदेश की जानकारी दें। अपनी इच्छा के अनुसार हम में कार्य करें, हम यीशु के नाम से प्रार्थना करते हैं। आमीन।

वास्तव में, हम ल्यूक के धर्मशास्त्र के बारे में सोचना चाहते हैं, उनके द्वारा लिखे गए सुसमाचार और उनके अधिनियमों की पुस्तक दोनों में। आइए हम ल्यूक के सुसमाचार से संबंधित कुछ ग्रंथ सूची से शुरुआत करें। डैरेल बाँक प्रमुख इंजील ल्यूक विद्वान हैं।

डैरेल डलास सेमिनरी में पढ़ाते हैं। शायद आपने उन्हें टेलीविजन पर दा विंची कोड या किसी अन्य विषय पर विभिन्न बहसों में देखा होगा। वह रूढ़िवादिता, तर्कसंगतता की आवाज हैं।

उनमें मधुर ईसाई भावना है। वह सच्चाई से समझौता नहीं करते। वह, क्रेग ब्लेज़िंग के साथ, प्रगतिशील युगवाद के वास्तुकारों में से एक हैं, जो एक लंबी कहानी है, लेकिन जो इस अनुबंध धर्मशास्त्री की नजर में शास्त्रीय युगवाद पर एक सुधार है, जो पहले से ही एक भिन्न इंजील धर्मशास्त्र था।

किसी भी मामले में, डेरेल ने बेकर द्वारा जारी न्यू टेस्टामेंट पर व्याख्यात्मक टिप्पणी में ल्यूक के संपूर्ण सुसमाचार को कवर करते हुए दो खंड लिखे, और वे वास्तव में अच्छे हैं, वास्तव में अच्छे हैं। वह एक अच्छा व्याख्याता है, वह एक अच्छा धर्मशास्त्री है, वह अच्छा लिखता है। यदि आपके पास था, तो मैं कहूंगा, उन्हें चर्च की लाइब्रेरी में या किसी प्रकार का, शायद ऑनलाइन, थोड़ा सा नमूना लें, थोड़ा सा पढ़ें, यह सुनिश्चित करने के लिए कि यह आपके स्तर पर है, लेकिन वे अच्छे हैं, वास्तव में अच्छे हैं।

जोएल ग्रीन असबरी थियोलॉजिकल सेमिनरी में पढ़ाते थे। वह आर्मिनियाई परंपरा में एक बहुत ही शानदार नए नियम के विद्वान हैं। उन्होंने न केवल व्याख्या में, बल्कि व्याख्या और धर्मशास्त्र में

भी वास्तविक रुचि विकसित की है और अपने कार्यक्रम का नेतृत्व करने के लिए कैलिफोर्निया के फुलर सेमिनरी में चले गए हैं, जो व्याख्या और धर्मशास्त्र को जोड़ता है।

नए नियम पर एक नई अंतरराष्ट्रीय टिप्पणी में ल्यूक का उनका सुसमाचार उत्कृष्ट है। मुझे लगता है कि मैं कुछ विवरणों पर बॉक से अधिक सहमत होऊंगा, लेकिन ग्रीन कई वर्षों का अनुभव लेकर आए हैं, जैसा कि बॉक भी करते हैं, लेकिन ग्रीन की टिप्पणी सामाजिक-बयानबाजी अध्ययनों को शामिल करते हुए लिखी गई है, और मैं हमेशा उनसे सहमत नहीं होता, लेकिन वाह, अधिकांश समय मैं उनसे सहमत होता हूँ, और मुझे ल्यूक के बारे में सोचने के लिए सिखाया गया है और वास्तव में प्रेरित किया गया है। हम एक बार फिर जोएल ग्रीन की टिप्पणी के साथ थोड़ा काम करेंगे, यह देखने के लिए इसका नमूना लें कि क्या यह आपकी पसंद है।

आई. हॉवर्ड मार्शल, प्रतिष्ठित ब्रिटिश, मेथोडिस्ट, न्यू टेस्टामेंट विद्वान, जिन्होंने कई वर्षों तक पढ़ाया और अब सेवानिवृत्त हैं, अभी भी जीवित हैं, मैं समझता हूँ, ल्यूक, इतिहासकार और धर्मशास्त्री, ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण खंड लिखा, उस समय जब गॉस्पेल ल्यूक के लेखन, विशेष रूप से एक्ट्स, की ऐतिहासिक रूप से विश्वसनीय नहीं होने के कारण वास्तव में आलोचना की गई थी। मार्शल ने इस पर आपत्ति जताई। वह एक विश्व-प्रसिद्ध विद्वान हैं, विशेष रूप से एफएफ ब्रूस के बाद कई इंजील न्यू टेस्टामेंट विद्वानों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रसिद्ध हैं।

हॉवर्ड मार्शल ने विभिन्न ईसाई परंपराओं से कई लोगों को प्रशिक्षित किया, जो आज भी हमारे मदरसों में पढ़ाना जारी रखेंगे, और जो दूसरों को प्रशिक्षित करते हैं। उनकी पुस्तक वास्तव में ठोस और उपयोगी है। अगली चीज़ आश्चर्यजनक रूप से सीमा से परे शानदार है, वह है जीभ-इन-गाल के साथ, वे मेरे शुरुआती अक्षर हैं, यह बाद में है कि मैं आपको अधिनियमों की पुस्तक में एक चर्च के साथ फिर से मिलवाऊंगा।

लेकिन किसी भी मामले में, सबसे पहले, हम डैरेल बॉक और ल्यूक के सुसमाचार के परिचय के साथ उनकी ल्यूक टिप्पणी के एक खंड से शुरुआत करते हैं। अवलोकन।

ल्यूक का सुसमाचार कम से कम दो मायनों में अद्वितीय है। सबसे पहले, यह सबसे लंबा सुसमाचार है। मानक ग्रीक संस्करण में, मैथ्यू 87 पृष्ठों का है। मार्क, मार्क 16:8 के संक्षिप्त अंत तक, 60 पृष्ठों का है। जॉन 73, जबकि ल्यूक 96 तक पहुँचे। एक बार और। ये नेस्ले-एलन के ग्रीक न्यू टेस्टामेंट के पत्रे हैं। मैथ्यू, 87 पृष्ठ; मार्क, 60; जॉन, 73; और ल्यूक, 96 पृष्ठ। छंदों की तुलना से समान संख्या का पता चलता है। मैथ्यू में 1,071 छंद हैं। मार्क, 678. जॉन के पास 869 छंद हैं, जबकि ल्यूक के पास 1,151 छंद हैं।

दूसरा, यह एकमात्र सुसमाचार है जिसका एक और भाग है। इस प्रकार, लूका न केवल यीशु और उनकी सेवकाई का परिचय देता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि वह सेवकाई प्रेरितों के काम की पुस्तक में आरंभिक चर्च युग से कैसे संबंधित है। यह संबंध लूका को यह चर्चा करने में सक्षम बनाता है कि कैसे परमेश्वर ने यीशु में अपना उद्धार लाया, कैसे आरंभिक चर्च ने यीशु का प्रचार किया, और कैसे उन्होंने यहूदी और गैर-यहूदी दोनों के लिए अपने मिशन को अंजाम दिया। दोनों खंड और उनका संदेश वस्तुतः अविभाज्य हैं।

विहित विभाजन के बावजूद, लूका का सुसमाचार अक्सर उन कई मुद्दों की नींव रखता है जिनके उत्तर प्रेरितों के काम में मिलते हैं। यह एक समस्या को जन्म देता है। लूका-प्रेरितों के काम एक ही काम के दो भाग हैं।

तो क्या वास्तव में नया नियम मैथ्यू, मार्क, ल्यूक-एक्ट्स, जॉन या मैथ्यू, मार्क, जॉन, ल्यूक-एक्ट्स होना चाहिए? यह एक अच्छा सवाल है। हम इसे अभी नहीं बदलने जा रहे हैं। लेकिन यह है, मैंने यह अध्ययन करके सीखा है, बेशक, एक सुधारवादी धर्मशास्त्री के रूप में, मैं पॉलिन धर्मशास्त्र को जानता हूँ।

शायद यही मेरी खूबी है। लेकिन मैंने वास्तव में जोहानाइन धर्मशास्त्र पर ध्यान केंद्रित किया है। और मेरे व्याख्यान [biblicalelearning.org](http://biblicalelearning.org) पर उपलब्ध हैं, जोहानाइन धर्मशास्त्र पर व्याख्यान की एक पूरी श्रृंखला, विशेष रूप से चौथे सुसमाचार का धर्मशास्त्र।

लेकिन मैं लुकान धर्मशास्त्र में नया हूँ, लेकिन अभिभूत हूँ। यह अद्भुत है। और मेरे द्वारा प्रस्तुत इन नामों ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है।

और बात सिर्फ इतनी है कि मैं इसे लेकर उत्साहित हूँ। यह सचमुच रोमांचक है। और यहाँ एक चीज़ है जो मैंने सीखी। एक उस समस्या से संबंधित है। चूँकि ल्यूक-एक्ट एक साथ चलते हैं, आप उन्हें कहाँ रखते हैं? जैसा कि अब है, वे अलग हो गए हैं। यह समझ में आता है क्योंकि चारों सुसमाचार एक साथ होने चाहिए।

लेकिन यहाँ एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में ल्यूक के सुसमाचार का अध्ययन करने के लिए, हम कई चीज़ें करते हैं। हम ल्यूक का अध्ययन स्वयं करते हैं और कार्य स्वयं करते हैं। हम ल्यूक-एक्ट्स का भी अध्ययन करते हैं। बिल्कुल इसी तरह हमें यह करना चाहिए। ल्यूक-एक्ट्स भगवान की योजना पर प्रकाश डालता है।

हर कोई सहमत है। यह बताता है कि कैसे यहूदी और अन्यजाति ईश्वर द्वारा स्थापित समुदाय में समान रूप से रह सकते हैं, भले ही उस समुदाय की जड़ें मूल रूप से इज़राइल से किए गए वादे पर आधारित हों। ल्यूक के समय की चर्च में चार मुद्दे विशेष रूप से समस्याग्रस्त थे।

पहला सवाल उद्धार का था। यहूदियों के साथ समान आधार पर गैर-यहूदियों को परमेश्वर के लोगों के रूप में कैसे शामिल किया जा सकता है, यहाँ तक कि भोजन के साथ भोजन करने और खतना को छोड़ने जैसे मामलों तक, जो पुराने नियम में, उत्पत्ति 17 तक वापस जाते हुए, वाचा का संकेत था? परमेश्वर की आशा ने सभी जातियों को शामिल करने के लिए कैसे खोला, जिसमें कानून और यहूदी परंपरा से संबंधित बहुत कुछ शामिल नहीं था? लूका ने इन सवालों के जवाब मुख्य रूप से प्रेरितों के काम में दिए हैं क्योंकि वह बताता है कि परमेश्वर ने इस पूरी प्रक्रिया को कैसे निर्देशित किया। दूसरा, यह प्रतीत होता है कि विरोधाभास मौजूद है कि जब परमेश्वर की योजना काम कर रही थी, तो यहूदी परंपरा राष्ट्र के संदेश के लिए सबसे स्वाभाविक श्रोता काफी हद तक नकारात्मक प्रतिक्रिया दे रहे थे।

वास्तव में, यहूदियों ने उन मसीहियों को भी सताया जिन्होंने उन्हें परमेश्वर की आशा का उपदेश दिया था। परमेश्वर की योजना को इतनी शत्रुता क्यों मिल रही थी? क्या यह नया समुदाय परमेश्वर के वादे के प्रति इतना उदार होने के कारण शापित था, या यह धन्य था? यदि धन्य था, तो ऐसे आशीर्वाद का प्रमाण क्या था? क्या परमेश्वर ने इस्राएल तक पहुँचना बंद कर दिया था? क्या नया समुदाय विश्वास के पुराने समुदाय से अलग हो गया था? इस प्रश्न का लूका का उत्तर यह है कि चर्च ने खुद को इस्राएल से अलग नहीं किया। इसने राष्ट्र को उपदेश देना जारी रखा और पीछे नहीं हटा।

इसके बजाय, इस्राएल ने चर्च को बाहर निकाल दिया, और उसे एक नया समुदाय बनाने के लिए मजबूर किया। लूका के सुसमाचार में इस उत्तर के लिए आधार तैयार किया गया है, जिसमें विस्तार से बताया गया है कि राष्ट्र और विशेष रूप से उसके नेतृत्व ने यीशु के प्रति कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त की। और इसका उत्तर नकारात्मक है।

लूका-प्रेरितों के काम से संबंधित तीसरा मुद्दा यह था कि क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु का व्यक्तित्व और शिक्षा परमेश्वर की योजना में कैसे फिट बैठती है। यीशु, अपनी शारीरिक अनुपस्थिति के बावजूद, कैसे अपनी उपस्थिति बनाए रख सकते थे और परमेश्वर की आशा का प्रतिनिधित्व कर सकते थे? चर्च ऐसे अनुपस्थित व्यक्ति को कैसे महिमा दे सकता था और उसे परमेश्वर के कार्य का केंद्र कैसे मान सकता था? एक मारा गया व्यक्ति परमेश्वर के वादों की पूर्णता कैसे ला सकता था? उसके माध्यम से पूर्णता कैसे और कैसे आ सकती थी? प्रेरितों के काम यीशु के महिमामंडन पर जोर देकर इन सवालों के प्रमुख उत्तरों को लागू करता है। पॉल और जॉन के धर्मशास्त्र से, हम यीशु के महिमामंडन में विश्वास करते हैं, लेकिन प्रेरितों के काम में पुनरुत्थान और यीशु के महिमामंडन को एक शक्तिशाली तरीके से जोड़ा गया है।

यीशु के स्वर्गारोहण का उल्लेख कई बार किया गया है, खास तौर पर पॉल के लेखन में, पीटर के लेखन में, और जॉन में, लेकिन इसकी घटना की एकमात्र वास्तविक रिपोर्ट लूका 24 और प्रेरितों के काम 1 में है, जो लूका की पुस्तक के दो भागों को एक साथ जोड़ते हैं, उसके दो खंड एक साथ, ठीक उनके जोड़ पर, अगर आप चाहें तो। प्रेरितों के काम में यीशु के स्वर्गारोहण पर जोर देकर इन सवालों का प्रमुख उत्तर दिया गया है। वास्तव में, यह करता है, लेकिन लूका का सुसमाचार यीशु के स्वर्गारोहण के पीछे क्राइस्टोलॉजी को प्रस्तुत करके आधार तैयार करता है।

क्राइस्टोलॉजी, ईसा मसीह का सिद्धांत, ईसा मसीह के बारे में वह शिक्षा जो दृढ़ बनाती है, जो उनकी बाढ़ की मृत्यु, पुनरुत्थान और पिता के पास लौटने का आधार बनती है। चौथा, यीशु को उत्तर देने का क्या अर्थ है? क्या आवश्यक है? ऐसी प्रतिबद्धता बनाने में कोई क्या उम्मीद कर सकता है? और किसी को दिन कैसे जीना चाहिए, उस दिन तक कैसे जीना चाहिए जब तक यीशु वापस न आ जाए और आशा साकार न हो जाए? संक्षेप में, विश्वासी और नया समुदाय क्या हैं? यीशु के मिशन और उनके अनुसरण करने वाले शिष्यों के मिशन को परिभाषित करना ल्यूक के सुसमाचार का एक प्रमुख बोझ है। ल्यूक के अधिकांश भाग बताते हैं कि कैसे यीशु ने अपने शिष्यों को अपने प्रस्थान के लिए तैयार किया और उन्हें अपनी अनुपस्थिति में सेवा करने के लिए तैयार किया।

यहीं पर अध्याय 9 से 19 तक का महत्वपूर्ण लुकान खंड, शॉर्टहैंड का उपयोग करने के लिए, तथाकथित यात्रा कथा, जेरूसलम यात्रा, सुसमाचार में फिट बैठता है और इसके उद्देश्य को नियंत्रित करता है। तदनुसार, किसी को इस सुसमाचार की शिक्षा को अधिनियम की पुस्तक में दर्ज चर्च की अवधि से बहुत अधिक अलग नहीं करना चाहिए। ल्यूक 24:44 से 49 में, ल्यूक 5:31, 32 भी देखें, ल्यूक 5:31, 32 भी देखें, यीशु अपने मिशन को चर्च के मिशन के साथ जोड़ता है।

जेरूसलम यात्रा खंड, ल्यूक 9 से 19, और मैदान पर उपदेश की नैतिकता आसन्न अस्वीकृति की वास्तविकताओं के कारण सामने आती है।

लूका ने थियोफिलस के लिए इसे दर्ज किया, जिसके लिए उसने न केवल लूका के सुसमाचार को समर्पित किया, बल्कि प्रेरितों के काम की पुस्तक भी समर्पित की, जिसके समर्पण में उसने थियोफिलस को उसके पहले खंड की याद दिलाई, जिसमें निश्चित रूप से सुसमाचार का उल्लेख था। लूका ने थियोफिलस के लिए इसे दर्ज किया ताकि वह इस बारे में आश्चस्त हो सके कि परमेश्वर की योजना क्या है, एक शिष्य को क्या होना चाहिए, और कैसे एक शिष्य यीशु को पहचानने और घोषित करने के लिए समुदाय के कार्य में भाग लेता है, न केवल उस संदेश के माध्यम से जो नया समुदाय यीशु के बारे में देता है, बल्कि जिस तरह से शिष्य उस घोषणा के प्रति शत्रुतापूर्ण दुनिया में रहते हैं।

लूका के सुसमाचार और उसके बाद के प्रेरितों के काम की पुस्तक में इन सवालों को शामिल किया गया है। इसलिए, लूका का काम थियोफिलस को आश्चस्त करना है, लूका 1:4, विशेष रूप से एक नए समुदाय में अन्यजातियों की विवादित उपस्थिति के संबंध में। मुझे लूका 1:1 से 4 पढ़ना चाहिए। यह लूका के सुसमाचार के लिए कार्यक्रम है।

बहुतों ने उन बातों का वर्णन लिखने का बीड़ा उठाया है, जो हमारे बीच में हुई हैं, और जो आरम्भ से इनके प्रत्यक्षदर्शी और वचन के सेवक थे, उन्होंने हमें सुनाई हैं। (लूका अपने आप को उन प्रत्यक्षदर्शियों से अलग करता है।) हे श्रीमान थियुफिलुस, मुझे भी यह अच्छा लगा कि जो बातें मैं ने कुछ समय से देखी हैं, उन को तुम्हारे लिये क्रमानुसार लिखूँ, कि जो बातें तुम ने सीखी हैं, उनके विषय में तुम निश्चित हो जाओ।

लुकान विद्वान इस बात पर बहस करते हैं कि क्या यह, ठीक है, सामान्य तौर पर वे थियोफिलस को एक वास्तविक व्यक्ति मानते हैं। पहली सदी के ग्रीको-रोमन लेखों को किसी को समर्पित किया जाना असामान्य नहीं था, शायद किसी संरक्षक को। लेकिन इस मामले में, इस पर बहस चल रही है: क्या वह ईसाई बनने के बारे में सोच रहा है, या वह पहले से ही आस्तिक है? किसी भी स्थिति में, जब हम ल्यूक और एक्ट्स का सुसमाचार पढ़ते हैं तो थियोफिलस पर नजर रखना अच्छा होता है क्योंकि थियोफिलस शुरुआती छंदों में ही फिर से वहीं प्रकट होता है। और बाख हमें ऐसा करने में मदद करता है।

समय-समय पर वह बिल्कुल वैसा ही करता है जैसा उसने यहां किया है। तो ल्यूक का कार्य थियोफिलस को आश्चस्त करना है, ल्यूक 1:4, इस तरह। ल्यूक के सुसमाचार में सबसे महत्वपूर्ण

ईश्वर की योजना और वादे में यीशु की भूमिका है, जबकि अधिनियम नए समुदाय की प्रकृति का वर्णन करता है, जो कि चर्च होगा, जो उनके मंत्रालय से उभरा।

इस नए समुदाय की ऐतिहासिक जड़ें यहूदी वादे में हैं लेकिन यह प्राचीन यहूदी समुदाय के तीव्र दबाव में है। अतिरिक्त दबाव यहूदी ईसाइयों की ओर से आता है जो चाहते हैं कि कानून के कुछ मामलों में अन्यजातियों का संबंध अधिक अनुकूल हो। अधिकांश यहूदी धर्म ने यीशु में पूर्ति के ईसाई दावों को खारिज कर दिया।

क्या कोई अन्यजाति वास्तव में इस नये समुदाय में है? क्या ईश्वर वास्तव में ऐसे समुदाय के पीछे हो सकता है जो इतनी शत्रुता और अस्वीकृति का सामना करता है? यीशु वास्तव में अपने जीवन और शिक्षण में क्या थे? यीशु का जीवन, शिक्षा, मृत्यु और पुनरुत्थान वास्तव में लूका 1:1 में हमारे बीच घटित दैवीय घटनाओं को कैसे दर्शाते हैं? ईश्वर की योजना, उसके चुने हुए यीशु और उभरते नए समुदाय के बारे में ये प्रश्न ल्यूक के सुसमाचार के केंद्र में हैं। तो, ल्यूक का सुसमाचार यीशु के माध्यम से एक शक्तिशाली और वफादार भगवान की गतिविधि पर प्रकाश डालता है, जिसका वादा किया गया है जो रास्ता दिखाता है। भगवान स्वयं को प्रकट करते हैं।

वह खुद को, अपने चुने हुए को, अपने वादे को और अपनी योजना को उस व्यक्ति के माध्यम से प्रकट करता है जो अब जी उठे मसीहा और प्रभु है। परमेश्वर खुद को, अपने चुने हुए को, यीशु को, अपने वादे को और अपनी योजना को जी उठे मसीहा और प्रभु के माध्यम से प्रकट करता है। प्रेरितों के काम 2:36 और 10:36। प्रेरितों के काम 2:36, प्रेरितों के काम 10:36। लूका के सुसमाचार में पूर्ति के चरित्र और शत्रुता के संकेत का परिचय दिया गया है जबकि प्रेरितों के काम में नए समुदाय के शुरुआती महत्वपूर्ण अध्याय का वर्णन किया गया है।

ल्यूक-एक्ट्स में कहा गया है कि यीशु सभी का प्रभु है, इसलिए सभी को मुक्ति मिल सकती है। मुक्ति क्रूस पर मिलती है। क्षमा करें, उद्धार उन शर्तों पर मिलता है जो पुनर्जीवित प्रभु ने निर्धारित की हैं।

बेशक, क्रॉस केंद्रीय है। आधिकारिक यहूदी धर्म के विपरीत, एक नया तरीका सामने आया था। यह पुराने नियम के पुराने पवित्र पाठ में वादा किया गया एक तरीका था, हालांकि वादा का रूप मूल रूप से समझा नहीं गया था।

यहाँ तक कि यीशु के शिष्यों को भी, उनकी सेवकाई के दौरान, यह सीखना पड़ा कि योजना कैसे काम करती है। लूका 9:35 और आयत 44 से 45। लूका 18:31 से 34 और सबसे खास तौर पर लूका 24:44 से 47। एक बार फिर। लूका 9:35 और 44 और 45; लूका 18:31, 34, और अध्याय 24, आयत 44 से 47।

यहूदी धर्म से नए समुदाय का अलग होना ईसाइयों की गलती नहीं थी। यीशु और चर्च ने हमेशा यहूदियों को आशा की किरण दिखाई। हालाँकि, इस प्रस्ताव का कड़ा विरोध हुआ।

ऐसी शत्रुता ने यीशु को मार डाला, और ईसाई अंत तक ऐसे प्रतिरोध की उम्मीद कर सकते हैं। ज़रूरत है वफादार होने की। फिर भी, परमेश्वर इस नए आंदोलन के पीछे था और है।

यीशु का कार्य, शिक्षा, मृत्यु और पुनरुत्थान इस सत्य को दर्शाते हैं, लूका, जबकि नया युग कलीसिया के माध्यम से वचन के विस्तार को दर्शाता है, जो पीटर से यरूशलेम तक और रोम में पॉल तक है, प्रेरितों के काम। पीटर से यरूशलेम, पॉल से रोम तक। यह बहुत सरल है।

लेकिन प्रेरितों के काम की पुस्तक की एक बुनियादी रूपरेखा। इस नए समुदाय में यहूदियों और गैर-यहूदियों दोनों का स्वागत है। वास्तव में, परमेश्वर ने पूरे मामले को निर्देशित किया है।

पहला बिंदु, फिर से, परमेश्वर की योजना है। परमेश्वर ने पूरे मामले को निर्देशित किया है, यहाँ तक कि नए समुदाय में यहूदियों और अन्यजातियों को एक दूसरे के साथ कैसे संबंध रखना चाहिए। प्रेरितों के काम 10, अध्याय 11, और अध्याय 15।

प्रेरितों के काम के तीन अध्याय, विशेषकर, 10, 11, और 15. निश्चित रहें, यीशु ने परमेश्वर की इच्छा, मार्ग और आशीष को प्रकट किया।

आशीर्वाद उन सभी के लिए उपलब्ध है जो यह महसूस करते हैं कि वे खोये हुए हैं, और इसलिए यीशु के माध्यम से परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं, लूका 5:30 से 32 और लूका 19:10।

लूका 5:30 से 32. और लूका 19:10, जिसे कई लोग लूका के उद्धार के संदेश का सारांश देने वाली सबसे महत्वपूर्ण आयत मानते हैं। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुआ को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।

परमेश्वर ने उन लोगों से अपना वादा निभाया है और निभाएगा जो उसकी ओर मुड़ते हैं। वह वादा करता है जिसकी जड़ें प्राचीन धर्मग्रंथों की आशा तक फैली हुई हैं और जिसकी प्राप्ति यीशु में हुई है और होगी। अधिनियम 2:14 से 41; अधिनियम 3:11 से 26.

और जिसका बोध यीशु में आ चुका है और आयेगा। यह एक बड़ा वाक्य है. मैं इसे दोबारा करूंगा. परमेश्वर ने उन लोगों से अपना वादा निभाया है और निभाएगा जो उसकी ओर मुड़ते हैं। वादे जिनकी जड़ें प्राचीन धर्मग्रंथों की आशा तक फैली हुई हैं। ल्यूक 1, मैंने ये पहले नहीं दिये थे। लूका 1:14 से 17, लूका 1:31 से 35; ल्यूक 1:57 से 79; ल्यूक 4:16 से 30। और फिर, ल्यूक 24:44 से 47।

परमेश्वर उन लोगों से अपना वादा निभाएगा जो उसकी ओर मुड़ते हैं। हम इसे ल्यूक में देखते हैं। हम इसे अधिनियमों की पुस्तक में जबरदस्त रूप से देखते हैं।

और बचाने के वे वादे पुराने नियम पर आधारित हैं। ल्यूक 1:14 से 17, 31 से 35, 57 से 79; लूका 4:16 से 30; और ल्यूक 24:44 से 47.

और उन वादों का एहसास, पूरा एहसास, एहसास तो आ गया लेकिन पूरा नहीं आया। अधिनियम 2:14 से 41 तक यह अभी भी भविष्य है; अधिनियम 3:11 से 26.

ल्यूक के सुसमाचार की उत्पत्ति और उद्देश्य। लेखकत्व, सबसे पहले। लेखकत्व और स्रोत। न तो ल्यूक का सुसमाचार और न ही प्रेरितों के कार्य इसके लेखक का नाम बताते हैं। बाहरी और आंतरिक साक्ष्यों के संयोजन से पता चलता है कि ल्यूक दोनों कार्यों के लेखक थे।

निःसंदेह, आंतरिक साक्ष्य का तात्पर्य उस चीज़ से है जो अध्ययन की जा रही पुस्तक के भीतर है। इस मामले में, ल्यूक का सुसमाचार या अधिनियमों की पुस्तक में। बाह्य साक्ष्य, निश्चित रूप से, अध्ययन की जा रही पुस्तक के बाहर के साक्ष्य को संदर्भित करता है, जैसे कि चर्च के पिताओं और बाइबिल के प्राचीन संस्करणों में।

आंतरिक साक्ष्य। आंतरिक विशेषताएँ दो बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करती हैं।

सबसे पहले, जैसा कि हमने लूका 1:1 से 4 में देखा, लेखक दो खंडों में अधिकांश घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी नहीं है, विशेष रूप से वे जो यीशु की सेवकाई से जुड़ी हैं। लूका 1:1 और 2। इसके बजाय, उसने परंपराओं के अपने अध्ययन पर भरोसा किया है, जो लूका के सुसमाचार के प्रस्तावना को फिर से उद्धृत करते हुए, प्रत्यक्षदर्शियों और वचन के सेवकों से आया है। करीबी उद्धरण, लूका 1:2 से 4।

दूसरा, लूका अपने आपको प्रेरितों के काम के उन भागों में पौलुस के साथी के रूप में प्रस्तुत करता है जिन्हें हम खंड कहते हैं। और वे हैं भी, अर्थात् लूका तीसरे व्यक्ति में लिखता है और फिर वह स्थानांतरित होकर प्रथम-व्यक्ति बहुवचन में चला जाता है। हमने यह किया। हमने वह किया। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने अपने आप को अपनी कथा में शामिल कर लिया है। प्रेरितों के काम 16:10 से 17। प्रेरितों के काम 20:5 से 15; प्रेरितों के काम 21:1 से 18, और फिर जहाज़ की तबाही वाले मार्ग में, प्रेरितों के काम 27:1, और 28:16 तक। ये हम खंड हैं।

तो, दो तथ्य। लूका कहता है, इसका तात्पर्य है कि वह उन घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी नहीं था जिनके बारे में वह अपने सुसमाचार में लिखता है। नंबर दो, कभी-कभी वह अपने आप को प्रेरितों के काम की पुस्तक की कथा में डाल देता है। पुनः, हम खंड प्रेरितों के काम 16:10 से 17 हैं; प्रेरितों के काम 20:5 से 15। प्रेरितों के काम 21:1 से 18। प्रेरितों के काम 27:1 से 28:16।

यह विशेषता, हालांकि इसकी ऐतिहासिक विश्वसनीयता के संबंध में बहस की जाती है, लेखक की पहचान के बारे में विकल्पों को सीमित करती है। बॉक ने ऐतिहासिक रूप से हम अनुभाग की विश्वसनीयता के बारे में बहस का उल्लेख क्यों किया? क्योंकि वह एक अच्छे विद्वान हैं। क्या वह विश्वसनीयता में विश्वास करते हैं? हाँ, वह करते हैं।

लेकिन अगर वे अलग-अलग दृष्टिकोणों का उल्लेख नहीं करते तो वे लूका के सुसमाचार पर अकादमिक टिप्पणी में अपना काम नहीं कर रहे होते। और सच तो यह है कि कभी-कभी सच्चाई अजीब जगहों से आती है। लेकिन डैरेल बाख बाइबल पर विश्वास करते हैं, लूका और प्रेरितों के काम के संदेश पर विश्वास करते हैं, जैसा कि आप उनके काम का एक पृष्ठ पढ़कर देख सकते हैं।



हमारे अनुभागों को लेकर मौजूदा बहस यह है कि क्या वे किसी प्रत्यक्षदर्शी की गवाही को प्रतिबिंबित करते हैं या एक साहित्यिक उपकरण हैं जो किसी प्रत्यक्षदर्शी की उपस्थिति का आभास देता है। लोग इसे आगे बढ़ाना चाहते हैं। पहला स्थान, एलिस ने 1974 में एक किताब लिखी थी। हेमर, कॉलिन हेमर, 1989। उन दोनों ने इससे संबंधित बातें लिखीं कि यह एक कल्पना थी। हम वाली बात एक कल्पना है।

1971 में अपनी प्रसिद्ध टिप्पणी में उदारवादी टिप्पणीकार, हैनसन, और अन्य भी। इस प्रश्न में यह मुद्दा भी शामिल है कि तीसरे सुसमाचार का लेखक पॉल को कितनी अच्छी तरह जानता था। माफ़ करें।

चूँकि प्रेरितों के काम के दो भाग अपने लेखक को प्रेरित पौलुस के यात्रा साथी के रूप में चित्रित करते हैं, जो लोग इस तरह के संबंध को अस्वीकार करते हैं, वे पौलुस के लूका के चित्र की तुलना पौलुस के पत्रों के आत्म-चित्र से करने का प्रयास करते हैं। उनका तर्क है कि दोनों चित्र विस्तार या धार्मिक महत्व में मेल नहीं खाते हैं। इसके अलावा, लूका पौलुस के पत्रों का उपयोग पौलुस के कार्य और पद का वर्णन करने में विफल रहता है।

विएलहॉयर, एक अन्य आलोचक जो कहते हैं कि हम अनुभाग अविश्वसनीय हैं, विएलहॉयर, विएलहॉयर, उन लोगों के लिए जो ऐसा चाहते हैं। विएलहॉयर का तर्क है कि चित्रों में इतनी दूरी है कि तीसरे सुसमाचार के लेखक को पॉल का साथी नहीं माना जा सकता।

लेकिन अधिनियम 1989 पर रोमन कैथोलिक टिप्पणीकार, फिट्ज़मायर, इस संबंध का बचाव करते हुए तर्क देते हैं कि एक रचनात्मक साहित्यिक उपकरण यह नहीं समझा सकता है कि हम इकाइयां इतने मनमाने तरीके से कैसे प्रकट और गायब हो जाती हैं। उन्होंने यह भी नोट किया कि कई नौकायन संदर्भ, जो ऐसे साहित्यिक सम्मिलन के लिए उम्मीदवार होंगे, उनमें कमी है।

जोसेफ फिट्ज़मायर का सुझाव है कि आइरेनियस के प्रसिद्ध दावे के विपरीत ल्यूक केवल एक कनिष्ठ साथी हो सकता है कि ल्यूक पॉल से अविभाज्य था। आइरेनियस ने अपने अगेंस्ट हेरेसीज़ 3.14.1 में कहा कि। इसके अलावा, गोल्डर, एक अन्य उदारवादी, 1989, का सुझाव है कि ल्यूक को पॉल के कुरिन्थ को लिखे पहले पत्र और, कुछ हद तक, थिस्सलुनीके को लिखे उसके पहले पत्र के बारे में पता होगा और उसका उल्लेख किया होगा। अन्य लोग अपने लेखन पॉल एंड एपोस्टल ऑफ द हार्ट सेट फ्री, 1975 और 76 में पॉल, एफएफ ब्रूस के दो चित्रों की अनुकूलता का बचाव करते हैं।

अतः, लूका-प्रेरितों के कार्य में आंतरिक साक्ष्य हमें बताते हैं कि लेखक पौलुस को जानता था और कम से कम दूसरी पीढ़ी का मसीही था।

बाहरी साक्ष्य: हम लूका और प्रेरितों के काम के सुसमाचार के लेखकत्व से निपट रहे हैं, और हमने लूका-प्रेरितों के काम के भीतर की जानकारी के साथ काम किया है, और अब हम बाहरी जानकारी, बाहर की जानकारी, विशेष रूप से चर्च के पिताओं की जानकारी पर अधिक व्यापक

रूप से विचार कर रहे हैं। बाहरी साक्ष्य: पॉलिन पत्रों में कुछ संभावित उम्मीदवारों के नाम हैं जिन्होंने पॉल के साथ यात्रा की थी।

वैसे, लूका के बाहरी साक्ष्य में बाइबल का बाकी हिस्सा या लूका के प्रेरितों के काम से जुड़े हिस्से शामिल हैं। पॉल की चिट्ठियों में कुछ संभावित उम्मीदवारों के नाम हैं जिन्होंने पॉल, मार्क, अरिस्तर्खुस, देमास और लूका के साथ यात्रा की थी। फिलेमोन 24, कुलुस्सियों 4:14। इस सूची में, कोई तीमुथियुस, तीतुस, सीलास, इपफ्रास और बरनबास जैसे लोगों को जोड़ सकता है।

फिर भी पॉल के साथी और संभावित लेखकों के रूप में उपलब्ध संभावित उम्मीदवारों के व्यापक चयन के बावजूद, चर्च की परंपरा इन दो खंडों के लेखक के रूप में केवल एक नाम पर ध्यान देती है, ल्यूक। यह परंपरा प्रारंभिक चर्च में 200 ई. तक दृढ़ता से स्थापित हो गई थी और बिना किसी विपरीत राय के आज भी कायम है। आप कहते हैं 200, क्या इतनी देर नहीं हुई? अभी देर नहीं हुई है।

जब आप पहली सदी की दुनिया में परिवहन और संचार पर विचार करते हैं, तो आज दुनिया में कहीं कोई घटना घटी और कुछ ही क्षणों बाद, यह हर जगह समाचारों में आ गई; यह अविश्वसनीय है। निश्चित रूप से, ऐसा नहीं था, और सिर्फ कैनन के मामले पर विचार करें क्योंकि वहाँ कई अपोकलिफ़ल गॉस्पेल, प्रेरितों के काम की पुस्तकें, प्रेरितों के नाम से लिखे गए पत्र और यहाँ तक कि सर्वनाश, रहस्योद्घाटन की पुस्तकें भी थीं। इसलिए, उदाहरण के लिए, पीटर का एक गॉस्पेल है, उसने इसे नहीं लिखा, लेकिन पीटर के काम की एक पुस्तक है, पीटर का एक तीसरा पत्र है, उसने उसे भी नहीं लिखा, और पीटर का एक सर्वनाश है जिसे पीटर के नाम से जाना जाता है, और यही इनका नाम था, यही इन चीज़ों के नाम थे।

हम आभारी हैं कि चर्च ने इन सभी लेखों को छानने में अपना समय लिया। थॉमस के सुसमाचार को चर्च द्वारा स्वीकार नहीं किया गया क्योंकि एक सुसमाचार में, इसकी परिभाषा के अनुसार, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान शामिल है। तो, थॉमस जैसा महज कहने वाला दस्तावेज नहीं है; यह बाइबिल का सुसमाचार नहीं है।

पहली सदी के यहूदी धर्म आदि के बारे में जानकारी के लिए बेकार है, लेकिन यह बाइबिल का सुसमाचार नहीं है। इसलिए, संचार बहुत धीमा था और हम आभारी हैं कि चर्च ने अपना समय लिया और कैनन को सही किया, और ल्यूक-एक्ट्स के लिए वर्ष 200 तक ल्यूक के लेखन को मजबूती से स्थापित करना वास्तव में बहुत अच्छा है। इस विवरण पर किसी विवाद का न होना ही इस परंपरा को गंभीरता से लेने का एक मजबूत कारण है।

लूका के सुसमाचार के संकेत 1 क्लेमेंट 13.2 और 48.4 में भी मिलते हैं। 1 क्लेमेंट, प्रेरितिक पिताओं में से एक, 13.2 और 48.4 पहली सदी के अंत में 95-96 ई. के आसपास लिखा गया था। 2 क्लेमेंट 13.4, वर्ष 100 के आसपास, लूका के सुसमाचार का भी संकेत देता है। इसके अलावा, यीशु की शिक्षा का उपयोग लूका 10:7 में परिलक्षित होता है, जो 1 तीमुथियुस 5:18 में दिखाई देता है। मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है और 1 तीमुथियुस 5:18 में पॉल द्वारा उठाया गया है। पद 17: जो पुरनिये अच्छी रीति से प्रबन्ध करते हैं, वे दुगुने आदर के योग्य समझे जाएं,

विशेषकर वे जो प्रचार करने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है और वह यहां दो बातों को जोड़ता है, वह पुराने नियम के व्यवस्थाविवरण 25:4 के एक उद्धरण को जोड़ता है: जब बैल अनाज को रौंदता हुआ चलता हो, तो उसके मुंह पर लगाम न बांधना, और लूका का पद जिसे हमने अभी देखा, लूका 10:7 जिसका हमने अभी उल्लेख किया है, और मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है, दिलचस्प बात यह है कि इसे पवित्रशास्त्र के रूप में संदर्भित किया गया है, यहां पौलुस के लेखन में पहले से ही कई ग्रंथ लेखकत्व पर टिप्पणी को जोड़ते हैं।

ट्राइफो 103.19 के साथ संवाद में लगभग 160 वर्षीय जस्टिन शहीद, ल्यूक द्वारा यीशु का एक संस्मरण लिखने की बात करते हैं और नोट करते हैं कि कैसे लेखक पॉल का अनुयायी है। 170 से 180 ईस्वी के आसपास मोरेटोरियम कैनन में ल्यूक, एक डॉक्टर, जो पॉल का साथी था, को सुसमाचार का श्रेय दिया जाता है। अर्गेस्ट हेरेसीज़ 3.1.1 और 3.14.1 और 3.1.1 में आइरेनियस 175 से 195 के आसपास। 3.14.1 पॉल के अनुयायी ल्यूक को सुसमाचार का श्रेय देता है, और नोट करता है कि कैसे हम अनुभाग संबंध का सुझाव देते हैं, इसलिए चर्च के पिताओं ने 175 के आसपास ल्यूक को तथाकथित एंटी-मार्सियोनाइट प्रस्तावना में हम अनुभागों को नोट किया, ल्यूक का वर्णन एक के रूप में किया गया है सीरिया में अन्ताकिया के मूल निवासी, अधिनियम 11:19-30 अधिनियम 13:1-3, अधिनियम 15:30-35 की तुलना करें। इसमें कहा गया है कि वह 84 वर्ष तक जीवित रहे, एक डॉक्टर थे, अविवाहित थे, अचिया में लिखते थे, और बोर्डोतिया में उनकी मृत्यु हो गई।

मार्सिओन के विरुद्ध टर्टुलियन का प्रारंभिक तीसरा शतक 4.2.2 और 4.5.3, 4.2.2, और 4.5.3। टर्टुलियन ने सुसमाचार को पॉल के सुसमाचार का सारांश कहा है। अर्गेस्ट मार्सिओन की प्रस्तावना, जो या तो तीसरी या चौथी शताब्दी की है, मृत्यु के समय ल्यूक की आयु 74 वर्ष बताती है।

अंत में, चौथी शताब्दी के आरंभ में यूसीबियस ने चर्च के इतिहास 3.4.2 में लूका का उल्लेख पॉल के साथी के रूप में किया है, जो एंटीओक का निवासी है और इन खंडों का लेखक है, जोसफ फिट्ज़मायर, रोमन कैथोलिक व्याख्याता, जिसका पहले उल्लेख किया गया है, ने 1981 में अपनी पुस्तक, पृष्ठ 40 में बाहरी साक्ष्य को आसानी से दो श्रेणियों में विभाजित किया है: नए नियम से क्या अनुमान लगाया जा सकता है और क्या नहीं, इससे यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता है कि लूका एक चिकित्सक था, पॉल से जुड़ा था, वह प्रत्यक्षदर्शी नहीं था और उसने अन्यजातियों की चिंताओं के साथ अपना सुसमाचार लिखा था, ये तथ्य हैं; नए नियम से स्पष्ट होता है कि लूका सीरिया से था; उसने पॉल के सुसमाचार की घोषणा की; वह अविवाहित था, वह निःसंतान था और बुढ़ापे में मर गया, ये ऐसे विचार हैं जो नए नियम में नहीं आते हैं

, हालांकि लूका की मृत्यु की उम्र के बारे में मतभेद हमें बताते हैं

लूका के बारे में दो अन्य प्रश्नों पर चर्चा की आवश्यकता है। क्या वह गैर-यहूदी था? क्या वह डॉक्टर था? अधिकांश लोग लूका को गैर-यहूदी मानते हैं, हालांकि वे इस बात पर बहस करते हैं कि वह शुद्ध गैर-यहूदी था या गैर-यहूदी सेमाइट। एक अपवाद एलिस 1974 है, जो तर्क देता है

कि लूका एक हेलेनिस्टिक यहूदी ईसाई था क्योंकि एक, लूका को पुराने नियम का बहुत ज्ञान था। दूसरा, कुलुस्सियों 4:10 और 11 में खतने वालों के संदर्भ में यह नहीं बताया गया है कि लूका यहूदी नहीं था, बल्कि वह केवल एक हेलेनिस्ट था।

और तीसरा, फिलिस्तीनी भाषा का उपयोग लूका की यहूदी जड़ों को दर्शाता है, लेकिन एलिस द्वारा कुलुस्सियों 4:10 और 11 को पढ़ना स्वाभाविक नहीं है क्योंकि सभी यहूदियों का खतना होता है। और लूका 4:14 को खतना किए गए लोगों में सूचीबद्ध नहीं किया गया है।

हाल ही में सैल्मन 1988 ने इस दृष्टिकोण का बचाव करते हुए कहा कि लेखक ने यहूदी समूहों को अलग करते हुए टोरा के पालन पर विस्तार से चर्चा की है।

तीन, वह एक यहूदी समस्या के रूप में गैर-यहूदी मिशन में रुचि रखते हैं और चार, ईसाई धर्म को यहूदी धर्म का एक संप्रदाय कहते हैं, इसमें लेखक के पुराने नियम के गहन ज्ञान को जोड़ा जा सकता है। कोई लूका के लिए इस जातीय संभावना को खारिज नहीं कर सकता है लेकिन कुलुस्सियों 4:14 के साथ नीचे दिए गए अन्य कारक इसे कम संभावित बनाते हैं। फिट्ज़मायर ने फिर 1981 में सुझाव दिया कि लूका एक गैर-यहूदी सेमाइट है, एक, कुलुस्सियों 4:10 और 11 और 14 पाठ के कारण। लूका के नाम का संक्षिप्त रूप एक लैटिन नाम का ग्रीक रूप है। और तीन, चर्च परंपरा का विवरण जिसने लूका को सीरिया के एंटीओच में रखा। यह दृष्टिकोण काफी संभव है। बॉक बताते हैं, वास्तव में, जब कोई फिट्ज़मायर के बिंदुओं को सैल्मन के साथ रखता है, तो संभावना

कुलुस्सियों 4:10 और 11 और 14: कुलुस्से में मेरे साथी कैदी अरिस्तर्खुस और बरनबास के भाई मरकुस का तुम्हें नमस्कार, जिसके विषय में तुम ने आज्ञा पाई है। यदि वह तुम्हारे पास आए, तो उसका और यीशु का जो यूस्तुस कहलाता है, स्वागत करना। परमेश्वर के राज्य के लिये मेरे सहकर्मियों में से केवल खतना किए हुए ये ही लोग हैं, और उन्हीं से मुझे शान्ति मिली है। इपफ्रास जो तुम में से एक है, और मसीह यीशु का दास है, तुम्हें नमस्कार कहता है, और हमेशा तुम्हारे लिये प्रार्थनाओं में प्रयत्न करता रहता है, कि तुम सिद्ध होकर परमेश्वर की इच्छा पर पूरी तरह से निश्चिन्त रहो। पद 14 को छोड़कर, प्रिय वैद्य लूका और देमास का तुम्हें नमस्कार।

अधिकांश टिप्पणीकार बिना किसी अतिरिक्त विवरण के ल्यूक को एक गैर-यहूदी के रूप में पहचानते हैं वे उन छंदों की ओर इशारा करते हैं जिन्हें मैंने अभी कुलुस्सियों 4 में पढ़ा है वे प्रेरितों के काम 1 पद 19 पर ध्यान देते हैं जिसमें एक सेमिटिक नाम के साथ एक क्षेत्र का उल्लेख है और फिर "उनकी भाषा" की बात करता है, यह सुझाव देता है कि यह ल्यूक की भाषा नहीं है। प्रेरितों के काम 1:19 में एक सेमिटिक नाम के साथ एक क्षेत्र का उल्लेख है और फिर "उनकी भाषा" की बात करता है, जो इसे लेखक से अलग करता है। अर्थात्, ल्यूक 3 हेलेनिस्टिक स्थानों की ओर ध्यान और गैर-यहूदियों के लिए चिंता को इंगित करता है। यह अंतिम तर्क मजबूत नहीं है क्योंकि पॉल जैसा यहूदी ऐसे भौगोलिक स्थानों और चिंताओं में फिट हो सकता है।

में, यह बहुत संभव लगता है कि ल्यूक एक गैर-यहूदी था, हालांकि यह स्पष्ट नहीं है कि उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि सेमिटिक थी या नहीं, किसी भी मामले में, मसीह में आने से पहले उसका

यहूदी धर्म से संभवतः धार्मिक संपर्क था।

कुलुस्सियों 4:14 में ल्यूक को एक डॉक्टर के रूप में संदर्भित किया गया है। 1882 में होबार्ट ने ल्यूक के व्यवसाय के लिए सभी तकनीकी मौखिक सबूतों को इंगित करके इस संबंध को मजबूत करने की कोशिश की। होबार्ट द्वारा एकत्र किए गए संदर्भों के धन के बावजूद, 1926 में कैडबरी के काम से मामला अस्पष्ट हो गया, जिन्होंने दिखाया कि लगभग सभी कथित तकनीकी चिकित्सा शब्दावली सेप्टुआजेंट, जोसेफस, लुसियन और प्लूटार्क जैसे रोजमर्रा के ग्रीक दस्तावेजों में दिखाई देती है। इसका मतलब यह था कि भाषा किसी भी व्यवसाय वाले साक्षर व्यक्ति से आई हो सकती है।

अंततः, मुद्दा यह है कि कोई कुलुस्सियों और ल्यूक के बारे में परंपरा को कैसे देखता है जो प्रारंभिक चर्च में विकसित हुई थी। चूंकि इस तरह के विवरण को नोट करना आवश्यक नहीं था और कोई क्षमाप्रार्थी चिंता का विषय नहीं था, इसलिए इसे वास्तविकता को प्रतिबिंबित करने के लिए देखा जा सकता है।

तो, ल्यूक पॉल का कुछ समय का साथी है। संभावना है कि वह एक मेडिकल डॉक्टर होगा और संभवतः सीरिया के एंटीओक का रहने वाला होगा। वह यहूदी नहीं है, हालाँकि यह स्पष्ट नहीं है कि वह सीरियाई है या ग्रीको-रोमन। परंपरा यह भी इंगित करती है कि उन्होंने लंबा जीवन जिया।

अपने अगले व्याख्यान में हम ल्यूक-एक्ट्स के स्रोतों के बारे में सोचेंगे।

यह ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर अपने शिक्षण में डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं। यह सत्र 1, ल्यूक ग्रंथ सूची, और फिर डेरेल बॉक का अवलोकन और लेखकत्व है।